Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A Part — II (Hons)
Paper — III
नीतिशास्त्र (Ethics)

1

Notes / नैतिक प्रत्यय — "उचित एवं शुभ" (Right and good)

GRB BOOKS

नीतिशास्त्र व्यवहार की नैतिकता का विज्ञान है। यह कर्मों के सत् - असत् ज्ञान का, नैतिक शुभाशुभ का, अच्छे बुरे कर्मों में प्रवृत्त नैतिक कर्ताओं की योग्यता - अयोग्यता का समाज में रहनेवाले व्यक्तियों के अधिकार कर्तव्य और चरित्रगुणों का, उनकी स्वाधीनता और उत्तरदायित्व का विवेचन करता है। नैतिक चेतना में सन्निहित इन्हीं आधारभूत प्रत्ययों का सम्यक विवेचन इसका लक्ष्य है।" इस प्रकार मौलिक नैतिक प्रत्यय ये हैं —

1. औचित और अनुचित (Right and wrong)
2. शुभ और अशुभ (good and Evil)
3. सर्वोच्च शुभ (The Highest Good)
4. सत और शुभ (Right and Good)
5. कर्तव्य और दायित्व (Duty and obligation)
6. अधिकार और कर्तव्य (Right and Duties)
7. सद्गुण और कर्तव्य (Virtue and duty)
8. पुण्य और पाप (Merit and demerit)
9. पुण्य पाप और उचित - अनुचित (Merit-Demerit and Right wrong)
10. सद्गुण और पुण्य (Virtue and Merit)
11. कर्तव्य परायणता और अतिकर्तव्य परायणता

उपर्युक्त मौलिक प्रत्ययों में सत् (Right) और शुभ (Good) के प्रत्यय अधिक मौलिक है ऐसा डा० जे. एन. सिन्हा का विचार है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

1. उचित एवं शुभ (Right and Good) — मानव-आचरण के नैतिक नियमन में सत और शुभ दोनों प्रत्ययों का व्यवहार होता है, स्वाभाविक इन दोनों में परस्पर संबन्ध पाया जाता है। सत और उचित कर्म वे ही कहलाते हैं जो नीति का नियमों के अनुकूल हैं। असत या अनुचित कर्म वह है जो नैतिक नियमों का उल्लंघन करें। दोनों में ही नैतिक नियमों का संकेत मिलता है।

नैतिक नियम स्वयं साध्य नहीं हैं। नैतिक नियमों का लक्ष्य रहता है सर्वोच्च शुभ (highest good) की प्राप्ति। सत या उचित होती है। इसप्रकार सत या उचित (right) शुभ की प्राप्ति का एक साधन बन जाता है। अनुचित या असत कर्म अशुभ (evil) को उत्पन्न करते हैं। हमारा लक्ष्य शुभ (good) की प्राप्ति है और इस शुभ की प्राप्ति सत या उचित द्वारा होती है। अतः शुभ साध्य (end) है और सत एवं उचित साधन (means) है।

सत का प्रत्यय शुभ के प्रत्यय से गौण कोटि का है साध्य हमेशा अपने साधन से बड़ा माना जाता है। शुभ एक साध्य है और सत एक साधन। शुभ एक आदर्श है जिसकी प्राप्ति के लिए व्यक्ति को आत्म साक्षात्कार

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

GRB BOOKS

(Self-realization) का प्रयास करना चाहिए। यह वह (आदर्श) है, जो (आत्मा के) प्रज्ञात्मक स्वरूप की पुष्टि करता है। यह वह आदर्श है जो व्यक्ति के सम्पूर्ण आत्मा को - भावनात्मक (Emotional) और बौद्धिक (Rational) दोनों को - संतुष्ट करता है। सत का प्रत्यय नैतिक नियम या कर्तव्य - नियम के प्रत्यय से निकलता है। नैतिक नियम प्राकृतिक (natural) नियम नहीं है, इसे नैतिकता का कथन-मात्र नहीं माना जा सकता। "नैतिक नियम इसका नियम है जैसे होना चाहिए।" 'सत' वैधानिक नीतिशास्त्र (Jural ethics) का मौलिक प्रत्यय है किंतु 'शुभ' प्रयोजनवादी (Ideological) नीतिशास्त्र का मूलभूत प्रत्यय।

उचित या सत का प्रयोग साधन के रूप में होता है। किंतु शुभ का प्रयोग साधन और साध्य दोनों के लिए किया जाता है। प्रत्येक सापेक्ष शुभ (relative good) किसी लक्ष्य की प्राप्ति का साधन है। इस अर्थ में वो उचित या सत भी कहा जा सकता है। अतः जो शुभ है, वह उचित या सत भी है, और जो उचित है वह शुभ भी कहा जा सकता है। सापेक्ष शुभ सर्वोच्च शुभ का साधन माना जाता है। सर्वोच्च शुभ के लिए उचित प्रत्ययों का प्रयोग

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

नहीं होता। यही कारण है कि औचित्य का किसी अन्य आदर्श की प्राप्ति का साधन नहीं है।

शुभ का उचित नैतिकता से संबंध है, किन्तु शुभ का संबंध आदर्श से रहता है। वे सब लक्ष्य जिन्हें सिद्ध करने के लिए मनुष्य को अनवरत चेष्टा करनी चाहिए वे ही धर्म है और वे ही शुभ है। वे सब कर्म जो नैतिक नियमों के द्वारा मान्य हो, हमारे कर्तव्य हैं और वे उचित हैं। इस प्रकार शुभ शब्द का प्रयोग कर्तव्य और धर्म दोनों के लिए होता है।

शुभ औचित से अधिक मौलिक और व्यापक है। 'औचित' का केवल कर्तव्य के लिए व्यवहार होता है, किन्तु 'शुभ' का व्यवहार 'कर्तव्य' और धर्म दोनों के लिए होता है। मानव कर्मों के साथ ही औचित्य का प्रश्न बैठ सकता है चरित्र के साथ नहीं। किन्तु शुभ का प्रश्न मानव के कर्म और चरित्र दोनों के साथ रहता है। नैतिक निर्णय का वास्तविक विषय कर्म नहीं बल्कि व्यक्ति का चरित्र है। इसलिए, शुभ सत्य को औचित से अधिक मौलिक और अधिक व्यापक कहा जा सकता है।

शुभ पर ही औचित आश्रित है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

5

Notes

नैतिक नियमों को ही नैतिकता का ... बताया जाता है किन्तु इन नैतिक नियमों का कोई न कोई आदर्श नियम होता है। आदर्श की प्राप्ति का साधन माना जाता है। कारण ही कोई कर्म उचित या अनुचित माना जाता है। केवल किसी नैतिक नियम का पालन ही नैतिक आचरण नहीं कहलाता। नैतिक आचरण का अंतिम लक्ष्य सर्वोच्च शुभ की प्राप्ति है।

कुछ विद्वान उचित शब्द को ही प्रधानता देते हैं। वे लोग किसी नैतिक नियम को ही मनुष्य के आचरण का मापदण्ड मानते हैं। इन नियमों के अनुकूल आचरण को उचित और प्रतिकूल आचरण को अनुचित कहा जाता है। कुछ लोग राज्य के नियमों को, कुछ लोग सामाजिक नियमों को, कुछ लोग धार्मिक नियमों को तथा अन्य लोग अंतःकरण के नियमों को ही नैतिक नियम की संज्ञा देते हैं। यह मत वैधानिक या अंतरानुभूतिवाद कहलाता है।

कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार शुभ ही मुख्य मौलिक प्रत्यय है। इन लोगों के अनुसार परम लक्ष्य का विचार ही मानव जीवन का आदर्श है। कुछ लोग सुख को, कुछ लोग आत्मपूर्णता को परम-लक्ष्य मानते हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति में जो

GRB BOOKS
सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS
Notes

कर्म संहारात्मक हैं, इन्हें शुभ और बाधक कर्मों के [illegible] कहा जाता है। यह मत समुच्चयवाद कहलाता है। इसमें उचित और शुभ दोनों प्रत्ययों को महत्वपूर्ण बताया गया है। किंतु मत में केवल 'उचित' को ही प्राथमिक महत्व दिया गया है।

सुगम पास
AN EASY APPROACH